

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

[.....पिछले अंक से - अध्याय 5 - "मूल आस्थाएँ और उनका आपकी
वास्तविकता पर प्रभाव"]

लेखक : डॉ० रिक लिंडल

अनुवादक : डॉ० अनिल चड्ढा

अध्याय 5

अगली सुबह, रिक्की ने अपने घोड़े पर हीथर हिल्ल के लिये निकलने से पहले दूध निकालने में मदद की। जब वह वहां पहुंचा, तो वह चट्टान पर गया और, पहले की भांति, हीथर हिल्ल की ओर मुँह करके स्थिर खड़ा होने से पहले गोला चक्कर में घूमा - तीन बार घड़ी की सुई की दिशा में और तीन बार विपरीत दिशा में - अपने घोड़े, ट्रस्ट के बारे में एक स्नेह भरे विचार के साथ। समय थम गया था। हीथर हिल्ल खुली और पुरानी आत्मा दरवाजे पर आकर उसे अपने अध्ययनकक्ष में ले गई, और उन्होंने स्वयं को आरामदायक स्थिति में कर लिया।

पुरानी आत्मा ने, मुस्कराहट के साथ, कहा, "शुभ प्रभात, पृथ्वीवासी, और आध्यात्मिक आयाम में तुम्हारा फिर से स्वागत है।"

रिक्की ने विनम्रता से उत्तर दिया, "धन्यवाद।"



Rani Saahiba
Printed Art
Bhagalpuri Silk
Saree



Redmi Y1
(Dark Grey,
32GB) by
Xiaomi
₹8,999.00



Moto G5s Plus (Lunar
Grey, 64GB) by Motorola
₹14,999.00

मूल आस्थाएँ और उनका आपकी वास्तविकता पर प्रभाव

पुरानी आत्मा ने जारी रखा, “अब जब तुम कुछ प्रक्रियाओं को समझते हो जो तुम्हारी वास्तविकता बनाती हैं, मैं तुम्हें थोड़ा सा यह बता दूँ कि कैसे तुम धरती पर जीने के अनुभव को अपने लिये बेहतर तरीके से अनुकूल बना सकते हो. जैसा कि मैंने तुम्हें कल बताया था, तुम्हारे विचार तुम्हारी वास्तविकता बनाते हैं. इसलिये यह महत्वपूर्ण है कि तुम्हें इस बात की अच्छी समझ हो कि तुम अपने विचारों को वास्तव में अपने अनुभवों से कैसा आकार देते हो और, फलस्वरूप, तुम क्या चाहते हो. जिन विचारों के बारे में मैं बात कर रहा हूँ वह जो तुम सामान्यता सोचते हो उनकी सतह के नीचे या उनके पीछे होते हैं, और मैं उन्हें मूल आस्थाएँ कहूँगा.

“अब मैं तुम्हें विस्तार से यह बता दूँ कि कैसे यह मूल आस्थाएँ संसार को उस तरीके से आकार देती हैं जो तुम उसके बारे में समझते हो और, वास्तव में, जब तुम वास्तविकता बनाते हो तो वह कैसे कारक बनते हैं.”

“क्या वृहत तस्वीर और भी वृहतर हो जाएगी?”

“जीवन एक जटिल मामला है, और, यह इतना जटिल होने के कारण यह मनोहर है, क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?”

“हाँ सोचता हूँ, लेकिन मैं वास्तव में जो प्रश्न मैंने इस मुलाकात के लिये तैयार किये थे उन पर तुम्हारी टिप्पणियाँ सुनने का इंतजार कर रहा हूँ.”

“मैं जानता हूँ. वास्तव में जब मैं तुम्हें मूल आस्थाओं के बारे में बताऊँगा तो इनमें से ज्यादातर प्रश्नों के उत्तर तुम्हें मिल जायेंगे.”

“ठीक है, वह अच्छा रहेगा.”

पुरानी आत्मा के अध्ययनकक्ष में किताबों की अल्मारियाँ लगी हुई थी, और उसने एक खाने में से एक किताब निकाली, अपनी गोद में रखी, और बोला, “मेरे पास एक किताब है. इसका शीर्षक मूल आस्थाएँ है. उनके बारे में मैं तुम्हें बताता हूँ.”

पुरानी आत्मा ने शुरू किया, “यह किताब भौतिक संसार की कुछ मौलिक विशेषताओं का वर्णन करती है, जो तुम्हें समझनी होंगी, स्वीकार करनी होगी, और उनकी सीमा के अंदर रह कर ही कार्य करना होगा, ताकि जीवन में जो कुछ भी करने का तुम निर्णय करते हो उसमें उन्नति कर सको.”

“ऐसा लगता है कि यह मेरे रोजाना के जीवन में सहायक होगी.”

“हाँ, और जब तुम इन मौलिक विशेषताओं को अपने भीतर समावेश कर लोगे, तो धरती पर जीवन के विकसित होने के लिये मूल आस्थाओं का एक अटल समूह तुम्हारे मस्तिष्क में स्थापित हो जायेगा. यह मूल आस्थाएं तुम्हें एक ऐसा दृष्टिकोण देंगी जो तुम्हें अपने अनुभवों का निष्कर्ष इस तरह से निकालने देंगी कि जो बुनियादी निर्माण खंड तुम्हारे भौतिक संसार में है वह उनके अनुकूल हों - जिसका वर्णन मैंने तुमसे कल किया था.”

जीवन स्वयं को खोजने के बारे में नहीं है. जीवन स्वयं को बनाने के बारे में है.

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ

पुरानी आत्मा थोड़ा रुकी, और फिर बोली, “यह मूल आस्थाएं तुम्हारे सारे शेष जीवन में तुम्हारे बेकार के गुस्से के अनगिनित घंटे बचायेंगी, यदि तुम उन्हें अपने अंदर समावेश करने में सफल हो जाते हो तो.”

उत्साहित हो कर, रिक्की ने पूछा, “एक मूल आस्था क्या है? क्या तुम मुझे एक उदाहरण दे सकते हो?”

जो तुम्हारी ‘मूल आस्थाएं’ हैं वह उस तरीके को आकार देती हैं जिससे तुम अपने संसार को समझते हो और जैसे तुम अपनी वास्तविकता को बनाते हो उस पर सीधा प्रभाव डालती हैं.

पुरानी आत्मा ने, मुस्कराते हुए और अपनी आँखों में चमक के साथ, यह जानते हुए कि यह लम्बा पाठ होगा, उत्तर दिया, “मैं तुम्हें अनगिनित उदाहरण दूँगा. तुम्हारे समझने के लिये एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह मूल आस्थाएं जिनके बारे में मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ वह ‘अर्थ’ के आश्रय में हैं.”

“तुम्हारा अर्थ से क्या मतलब है?”

“मैं विस्तार से बताता हूँ. तुम्हारे सारे जीवनकाल के दौरान घटनाएं घटती हैं. तुम इन घटनाओं को पीछे मुड़ कर देखते हो और स्वयं से पूछते हो कि ऐसा क्यों हुआ? मैंने क्या सीखा? यह घटना मुझे मेरे बारे में क्या बताती है जब मैं पीछे मुड़ कर इसका अवलोकन करता हूँ तो? यह मेरे लिये किस तरीके से अर्थवान थीं? यह मनुष्य की प्रकृति का स्वतः होने वाला पहलू है कि वह घटना घट जाने के बाद सोचता है और उसे अर्थ देता है. यह, परिणाम स्वरूप, तुम्हें वर्तमान में उद्देश्य की अनुभूति देता है और यह तुम्हें उस क्षण में संतुष्टि महसूस करने में सहायता करता है. घटनाओं की यह निरंतर ‘पाचक प्रक्रिया’ जब गुजरती है तो यह तुम्हें अपने भविष्य का अनुमान लगाने में और जीवन में आगे बढ़ने में सहायता करता है.”

“ठीक है. मैं समझ गया.”

“अब, किसी घटना को अर्थ देना हमेशा व्यक्तिपरक प्रक्रिया होती है. अर्थात्, एक घटना का अर्थ उसके स्वामी द्वारा ही खोजा जा सकता है, या उस पर निर्णय लिया जा सकता है. इसीलिये तुम

किसी दूसरे व्यक्ति की घटना को अर्थ नहीं दे सकते. दूसरे शब्दों में, तुम दूसरे व्यक्ति के लिये कभी यह निर्णय नहीं ले सकते कि उसके लिये क्या अर्थवान है.”⁴⁶

“ठीक है. जब मैं सलाह दे रहा होऊंगा तो उसे दिमाग में रखूंगा.”

“और यह एक के बाद एक अर्थपूर्ण घटनाओं के माध्यम से ही होता है कि एक व्यक्ति को जीवनकाल में अपनी सारी यात्रा का अर्थ पता लग सके.”

“अब जब तुम समझते हो कि अर्थ से मेरा क्या मतलब है, अब मैं कुछ मूल आस्थाओं का वर्णन करूंगा.”

पुरानी आत्मा कुछ रुकी और बोली, “जो धारणाएं मैं तुम्हे बताऊंगा, वह हैं भाग्य, स्वतंत्र इच्छा, विशिष्टता, कार्य, संज्ञानात्मक विषमता, बुढ़ापा, और मृत्यु.”

रिक्की ने बीच में रोका, “लेकिन हमने पहले ही कल भाग्य और स्वतंत्र इच्छा के बारे में बात कर ली है.”

“हाँ, लेकिन अब मैं जिस पर जोर देना चाहता हूँ वह यह है कि तुम्हे भाग्य और स्वतंत्र इच्छा को भी मूल आस्थाओं की भांति लेना चाहिए. यह तब स्पष्ट होगा जब मैं तुम्हे इन धारणाओं के बारे में कुछ अतिरिक्त जानकारी दूंगा, और विशेषतया तुम्हारा भाग्य और स्वतंत्र इच्छा की ओर का रवैया तुम्हारे रोजाना होने वाले अनुभवों को कैसे आकर देगा और उन पर क्या प्रभाव डालेगा.”

“ओह, ठीक है.”

“कल, मैंने इन धारणाओं का उस दृष्टिकोण से परिचय करवाया था कि तुम अपने भाग्य को कैसे बनाते हो और, स्वतंत्र इच्छा होने के कारण, तुम अपने भाग्य को कैसे बदलते हो जब तुम दीर्घकालिक लक्ष्य निर्धारित करते हो. मैंने यह भी बताया था कि नियत घटनाएं कैसे विकसित सामंजस्य के साथ मिल जाती हैं और वह कैसे तुम्हारे वर्तमान में लाई जाती हैं, जब विकसित सामंजस्य उन्हें समय के आयाम में ले कर आता है. अब मैं इन धारणाओं को एक अधिक व्यक्तिगत दृष्टिकोण से बताना चाहूंगा, इस आशा में कि तुम उनसे अच्छी तरह से जुड़ पाओ.”

46 विक्टर ई. फ्रान्कल. द विल्ल टू मीनिंग: फाउंडेशनस एंड एप्लीकेशनस ऑफ़ लोगोथेरेपी. न्यू यॉर्क: पेंगुइन बुक्स, 1969

.....क्रमशः (अगले अंक में पढ़ें **भाग्य और सामंजस्य का विकास**)

